AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

देवा की माँ: मानवीय करुणा: स्त्री - वेदना और सामाजिक यथार्थ का व्यापक आख्यान

(लक्ष्मण कुमार पटेल[1])

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17703669

Review:14/11/2025 Acceptance: 15/11/2025 Publication:25/11/2025

शोध सार: कमलेश्वर की कहानी 'देवा की माँ' हिंदी साहित्य की उन महत्त्वपूर्ण कहानियों में से है, जो सामाजिक संरचना, जातिगत विडंबनाओं, गरीबी, स्त्री-अस्मिता और मानवीय करुणा को बड़े प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करती है। यह कहानी एक साधारण स्त्री 'देवा की माँ' के जीवन-संघर्ष, उसके त्याग, उसके संताप और उसके समाज द्वारा निर्मित अपमानजनक संदर्भों के भीतर उसकी नैतिक-आत्मिक मजबूती की कथा है। कहानी उस सामाजिक व्यवस्था का खुला दस्तावेज़ है जिसमें गरीब की तकलीफ़ किसी के लिए मायने नहीं रखती, और स्त्री की पहचान अक्सर उसकी सामाजिक भूमिका या संबंधों से ही तय की जाती है। कमलेश्वर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से न केवल उस स्त्री की त्रासदी को उजागर करते हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि किस तरह एक माँ अपने अस्तित्व की सीमाओं से ऊपर उठकर अपने बेटे के लिए संसार से लड़ती है। यह लेख कहानी के सामाजिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक आयामों, प्रतीकात्मकता, स्त्री-स्वर, करुणा-दृष्टि, और कमलेश्वर की व्यापक साहित्यिक चेतना के संदर्भ में विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द: कमलेश्वर, देवा की माँ, हिंदी कहानी, सामाजिक यथार्थ, स्त्री-दृष्टि, करुणा और संघर्ष, गरीबी की विडंबना, मानवता, यथार्थवाद, समकालीन कहानी|

देवा की माँ: मानवीय करुणा: स्त्री - वेदना और सामाजिक यथार्थ का व्यापक आख्यान: कमलेश्वर हिंदी कहानी के उन विरल रचनाकारों में हैं जिन्होंने समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े मनुष्य की करुणा, संघर्ष, वंचना और विडंबना को प्रमुखता दी। उनकी कहानियाँ किसी सजावटी आदर्शवाद या भावुकता की नहीं, बल्कि जीवन के कठोर यथार्थ की गहन पड़ताल करती हैं। 'देवा की माँ' इसी परंपरा की कहानी है। यह कहानी एक अनाम स्त्री के जीवन संघर्ष का दस्तावेज है, जो गरीबी, अपमान, शोषण और सामाजिक असमानता से भरी दुनिया में अपने बच्चे 'देवा' को बचाए रखने की जद्दोजहद में लगी रहती है। यह कहानी मात्र एक स्त्री की व्यथा नहीं, बल्कि पूरे समाज का एक वीभत्स चेहरा सामने लाती है। यह पाठक को भावुक नहीं करती, बल्कि भीतर तक हिला देती है। राजेंद्र यादव ने कमलेश्वर के बारे में कहा था- "कमलेश्वर की कहानी आपको भावुक नहीं करती, वह आपको भीतर से उत्तेजित कर देती है।[1] 'देवा की माँ' ऐसी ही कहानी है जहाँ स्त्री-वेदना, सामाजिक विडंबना, गरीबी, और मातृत्व की करुणा गहरे स्तर पर एक-दूसरे से जुड़ते हैं। इस कहानी की पहली विशेषता यह है कि कहानी की मुख्य स्त्री-पात्र का कोई नाम नहीं है। वह केवल 'देवा की माँ' है। हिंदी साहित्य में इससे पहले भी स्त्रियों को कभी-कभी नामहीन रूप में चित्रित किया गया है, लेकिन कमलेश्वर के यहाँ नामहीनता एक प्रतीक है -स्त्री की पहचान के लोप का प्रतीक। यह नामहीनता बताती है कि समाज स्त्री को स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में नहीं देखता। उसकी पहचान हमेशा किसी पुरुष के संदर्भ में तय होती है। उसकी दुनिया सीमित है- बेटे, पति, परिजनों और समाज की निगाहों के बीच। नामवर सिंह इस प्रकार की स्त्रियों के बारे में कहते हैं "यथार्थवादी कहानी में जहाँ स्त्री को नामहीन बनाया जाता है, वहाँ उसके अस्तित्व की विडंबना और सामाजिक स्थिति अधिक तीव्र रूप में उभरती है।"[2] 'देवा की माँ' भी इस विडंबना का उदात्त उदाहरण है। उसकी पूरी दुनिया केवल उसके बच्चे 'देवा' में सिमट गई है, और समाज ने उसे केवल उसी पहचान में स्वीकारा है।

यह गरीबी किसी भावात्मक पृष्ठभूमि की तरह नहीं, बल्कि एक सक्रिय शक्तिशाली पात्र की तरह उपस्थित है। कहानी में गरीबी उसके शरीर को बाज़ार बनाती है, उसकी अस्मिता को दांव पर लगाती है, उसे हर दिन अपमानित करती है, और उसके भविष्य (देवा) को भी असुरक्षित बना देती है। कमलेश्वर गरीबी को रोमांटिक ढंग से प्रस्तुत नहीं करते। वे उसकी कठोरता को उसी रूप में दिखाते हैं जैसे वह लोगों के जीवन में है। इस सन्दर्भ में सुधा पांडे ने कमलेश्वर की सामाजिक दृष्टि पर टिप्पणी करते हुए लिखा है- "कमलेश्वर गरीब पात्रों को दया का पात्र नहीं बनाते, बल्कि समाज की संरचनाओं में फँसे हुए मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं।"[3]

[1] लक्ष्मण कुमार पटेल, शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी, रायपुर छत्तीसगढ़

देवा की माँ की गरीबी उसकी हर साँस के साथ चलती है। यह गरीबी केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक भी है। 'देवा की माँ' स्त्री-शोषण की बहुपरत स्थितियों का खुलासा करती है। कहानी यह दिखाती है कि गरीब स्त्री के शरीर को समाज किस तरह उपयोग की वस्तु समझता है। स्त्री-शोषण यहाँ कई स्तरों पर उभरता है जिसमें आर्थिक शोषण- उसे पर्याप्त मजदूरी नहीं मिलती, वह किस पर भरोसा करे यह तय नहीं कर पाती। समाज के लोग उसकी मजबूरी का फायदा उठाते हैं। लैंगिक शोषण- उसके प्रति पुरुषों की दृष्टि वासनात्मक है। यह सामाजिक दृष्टि कमलेश्वर की कहानी में बार-बार उभरती है। जैसा कि डॉ. कामतानाथ लिखते हैं- ***"कमलेश्वर की स्त्रियाँ समाज की वासनाओं और पाखंडों से लगातार जूझती हैं; उनकी देह समाज की नैतिकता का खेल-घर बन जाती है।"***[4] जिस व्यक्ति से वह बचाव की उम्मीद करती है, वही उसे अपमानित करता है। समाज उसके चरित्र पर टिप्पणी करता है, जबकि दोषी समाज की संरचनाएँ हैं।

कमलेश्वर की कहानी में मातृत्व की अत्यंत मार्मिक प्रस्तुति है। देवा की माँ की घोर निर्धनता, अपमान, शोषण और अकेलेपन के बावजूद वह अपने बच्चे 'देवा' को बचाए रखने में विश्वास रखती है। देवा उसके जीवन का केंद्र है, वही उसके संघर्ष का आधार है, वही उसके जीवन का अर्थ है, वही उसकी अंतिम उम्मीद है। मातृत्व यहाँ आदर्शवादी या पौराणिक नहीं; बल्कि अत्यंत मानवीय, दर्द से भरा, संघर्षशील और कठिन है। कमलेश्वर माँ को देवी की तरह नहीं दिखाते, बल्कि एक ऐसी स्त्री के रूप में चित्रित करते हैं जो टूट-टूटकर भी जीती रहती है। राजकुमार राकेश लिखते हैं- "कमलेश्वर का मातृत्व-चिंतन भावुकता से मुक्त है। वह संघर्ष और अस्तित्व की वास्तविकता से उपजा मातृत्व है।"[5]

कहानी में मासूम 'देवा' वास्तविक अर्थों में भविष्य का प्रतीक है लेकिन प्रश्न यह है - क्या ऐसा भविष्य बच पाएगा ? क्या गरीबी अगली पीढ़ी को भी नष्ट कर देगी ? देवा एक प्रतीक है- उस बच्चे का, उस भविष्य का और उस उम्मीद का जो समाज के कठोर ढाँचे में अक्सर दम तोड़ देता है। कहानी पढ़ते हुए यह कचोटता प्रश्न बार-बार मन में उठता है कि यदि देवा की माँ आज नहीं बचेगी, तो कल देवा क्या बनेगा ? क्या वह भी उसी दलदल में फँस जाएगा जिसमें उसकी माँ है ? कमलेश्वर पाठक को हमेशा इस अनिश्चित भविष्य से जूझने को मजबूर करते हैं। कहानी का एक केंद्रीय पहलू यह है कि 'देवा की माँ' का शोषण करने वाले वही लोग हैं जो नैतिकता और समाज के ठेकेदार भी हैं। यह विडंबना कमलेश्वर के कथ्य को अत्यंत धारदार बनाती है। समाज स्त्री पर नियंत्रण चाहता है पर उसके श्रम का मूल्य नहीं देता और उसके शरीर को अपनी वस्तु समझता है। कमलेश्वर समाज की इसी क्रूरता को उद्घाटित करते हैं। आलोचक शंभुनाथ लिखते हैं -"कमलेश्वर की कहानियों में समाज का पाखंड सबसे तीखी आलोचना का विषय है।"[6] 'देवा की माँ' इस पाखंड का जीवंत उदाहरण है।

कमलेश्वर का कथा-शिल्प इस कहानी में अत्यंत प्रभावी है। उनकी लेखन-शैली सहज, सीधी, बोलचाल की भाषा पर आधारित और संवाद प्रधान है। वे विवरण को अनावश्यक विस्तार में न जाकर केवल वहीं प्रस्तुत करते हैं जहाँ उसका भावात्मक या वैचारिक महत्व है। इससे कहानी अत्यंत त्वरित, मार्मिक और प्रभावशाली बन जाती है। जैसा कि डॉ. रमेश पांडे लिखते हैं - "कमलेश्वर का कथा-शिल्प सरल होने पर भी अनेक अर्थ-परतों को समेटे होता है। वह पाठक के भीतर गहरे उतरता है।"7 कहानी में कई प्रतीक हैं - "छत" - सुरक्षा का प्रतीक, "रोटी" - अस्तित्व का प्रतीक, "देवा" - भविष्य और आशा का प्रतीक, "माँ" - संघर्ष का प्रतीक। इसके अलावा स्त्री की देह भी कहानी में एक बड़ा प्रतीक है - वह समाज की संरचना को बदलने में असमर्थ, लेकिन उसे झेलने को मजबूर है।

यद्यपि कहानी कई दशक पहले लिखी गई, आज भी वह उतनी ही प्रासंगिक है। आज भी गरीब स्त्री की पहचान को मान्यता नहीं मिलती, शोषण के रूप बदल गए, पर खत्म नहीं हुए, गरीबी पीढ़ियों को नष्ट कर रही है, सामाजिक पाखंड बढ़ा है। इस प्रकार कहानी आधुनिक सामाजिक परिदृश्य में भी वर्तमान की असलियत बयान करती है। 'देवा की माँ' का केंद्रीय संदेश है - गरीबी सबसे बड़ा अपराध है। स्त्री की अस्मिता आज भी असुरक्षित है। समाज का पाखंड गरीब और स्त्री दोनों पर सबसे अधिक हमला करता है। मातृत्व संघर्ष से जन्म लेता है, आदर्शवाद से नहीं। कमलेश्वर समाज के उस अंधेरे हिस्से को दिखाते हैं जिसे हम जानकर भी अनदेखा करते हैं। अतः 'देवा की माँ' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि स्त्री के संघर्ष, समाज की विडंबना और मानवता की करुणा की गहरी कथा है। कहानी यह दिखाती है कि समाज हमेशा स्त्री और गरीब के विरोध में खड़ा रहा है। स्त्री के लिए जीवन कठिन ही नहीं, बल्कि निरंतर संघर्ष का नाम है। मातृत्व की शक्ति समाज के ढोंग के बीच भी जीवित रहती है। भविष्य (देवा) का प्रश्न समाज के लिए आज भी चुनौती है। कमलेश्वर की यह कहानी आज भी उतनी ही प्रभावशाली और तीखी है जितनी अपने समय में थी। यह कहानी प्रत्येक पाठक को प्रश्नों, कचोट और संवेदना से भर देती है।

संदर्भ सूची:

- राजेंद्र यादव, हंस, विभिन्न संपादकीय टिप्पणियाँ
- नामवर सिंह, कहानी का समाजशास्त्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 74

- सुधा पांडे, कमलेश्वर की कहानियों में सामाजिक यथार्थ, आजकल, वर्ष 2005
- डॉ. कामतानाथ, आधुनिक हिंदी साहित्य : प्रवृत्तियाँ और मूल्यांकन, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 34
- राजकुमार राकेश, नई कहानी का विवेचन, साहित्य उपक्रम, पृष्ठ 44
- शंभुनाथ, हिंदी की कहानी, साहित्य अकादमी, दिल्ली, पृष्ठ 112
- डॉ. रमेश पांडे, हिंदी कहानी : परंपरा और परिप्रेक्ष्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 68|